श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

सितम्बर - प्रथम, अंक - 25 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

शिव संदेश

देहासक्ति को तोड़ने का मंत्र : अनशन

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

देहासक्ति की मूल जड़ क्या है? देहासक्ति की मूल जड़ है आहार। इसीलिए अनशन को महत्त्व दिया गया है। व्यक्ति सब कुछ सहन कर सकता है लेकिन भूख नहीं। किसी को तुम कितने ही सुंदर साधन, वस्त्र, मकान कुछ भी दे दो लेकिन बिना भोजन कुछ भी नहीं सुहाता है। वह व्याकुल ही रहेगा। इस प्रकार देहासक्ति का मूल है आहार। व्यक्ति शरीर की भूख को अपनी भूख मानता है। अनशन को इतना महत्त्व इसलिए दिया है कि उसके माध्यम से तुम यह देख सको कि यह भूख मेरी नहीं देह की है। अनशन वस्तुतः तुम्हारी देहासक्ति की परीक्षा है।

जबरदस्ती भूखा रहना अलग बात है। कोई समर्थ है और भूखा रह रहा है यह बात अलग है। क्योंकि केवल भूखा रहना ही सब कुछ नहीं है। देहासक्ति का टूटना भी जरूरी है। और वह होता है अनशन के साथ किए गए आत्मनिरीक्षण से। इसलिए कई जगह आयम्बिल को उपवास से अधिक महत्त्व दिया गया है। देहासक्ति को तोड़ने के लिए अनशन-आयम्बिल इत्यादि बहुत ही सहायक हैं। लेकिन अनशन किस प्रकार करना चाहिए यह भी देखना जरूरी है। अनशन में यह देखना है कि यह भूख मुझे लगी या देह को लगी। यह निरीक्षण होता है मनोगुप्ति की साधना से। अतः अनशन के साथ-साथ समिति व गुप्ति का अभ्यास भी आवश्यक है। मन का गोपन करना हो तब स्वयं का स्वयं तक आना आवश्यक है।

जैसे ध्यान के द्वारा हम मनोगुप्ति को साधते हैं। तब व्यक्ति का मन स्वयं में लीन होता है। और उस संल्लीनता से आत्मनिरीक्षण स्वयमेव होता है। इस प्रकार अनशन करते हुए अपने आपको देखने पर देहासक्ति टूटती है। यहाँ पर आहार त्याग से भी अधिक महत्वपूर्ण है आत्मनिरीक्षण। केवल आहार त्याग कर दिया इतना ही नहीं साथ-साथ ध्यान और कायोत्सर्ग की साधना भी होनी चाहिए। मनोगुप्ति को साधना अर्थात् मूलतः ध्यान एवं कायोत्सर्ग को साधना। इस प्रकार ध्यान करते हुए देहासक्ति टूटने का अपने आप अनुभव होगा। अनशन से मनोगुप्ति में प्रगाढ़ता आती है। लेकिन बिना समिति और गुप्ति की साधना के कोई भी अनुष्ठान सफल नहीं हो सकता। चाहे वह अनशन है, भक्ति है, प्रार्थना है, पूजा या प्रभु नाम स्मरण है। कुछ भी हो साथ में समिति गुप्ति आवश्यक है।

ज्ञान, कर्तव्य और करुणा से संवरे मानव जीवन

अध्यक्षीय

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष E-mail : ajvk1973@gmail.com

हमारे पर्व, महापुरुष और विशेष दिवस केवल परम्पराओं के निर्वाह के अवसर नहीं होते, बल्कि वे हमें अपने जीवन, कर्तव्यों और सामाजिक दायित्वों पर चिंतन करने की प्रेरणा देते हैं। शिक्षक दिवस और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के साथ नेपाल में आई प्राकृतिक आपदा की पीड़ा हमें क्रमशः ज्ञान, कर्तव्य और करुणा का महत्वपूर्ण संदेश देती है।

शिक्षक दिवस हमें उन गुरुजनों के प्रति कृतज्ञ होने का अवसर देता है, जो केवल अक्षर-ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि व्यक्ति के चरित्र और भविष्य का निर्माण करते हैं। एक श्रेष्ठ शिक्षक विद्यार्थी को यह नहीं बताता कि केवल जीवन में सफल कैसे होना है, वह यह भी सिखाता है कि सफलता के साथ संवेदनशील, अनुशासित और उत्तरदायी मनुष्य कैसे बनना है। आज जब नई पीढ़ी के पास ज्ञान और सूचना के असंख्य डिजिटल माध्यम उपलब्ध हैं, तब शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। सूचना हमें साधन दे सकती है, लेकिन उसका सदुपयोग करने का विवेक संस्कारवान शिक्षा और योग्य गुरु ही प्रदान करते हैं।

इसी प्रकार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी हमें कर्मशीलता, विवेक और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा देती है। श्रीकृष्ण का जीवन यह संदेश देता है कि परिस्थितियाँ कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हों, मनुष्य को अपने कर्तव्य-पथ से विचलित नहीं होना चाहिए। जीवन में कठिनाइयाँ आएँगी, लेकिन विवेक, धैर्य और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ उनका सामना करना ही श्रेष्ठ जीवन की पहचान है। भारतीय संस्कृति की विविध आध्यात्मिक परम्पराओं में आत्मानुशासन, सदाचार और लोककल्याण जैसे मूल्य मानव जीवन को ऊँचा उठाने की प्रेरणा देते रहे हैं।

वहीं नेपाल में आई प्राकृतिक आपदा के समाचार मन को व्यथित करते हैं। ऐसी विपदाएँ हमें याद दिलाती हैं कि प्रकृति के सामने भौगोलिक सीमाएँ, पद और संपन्नता सभी गौण हो जाते हैं। संकट की घड़ी में सबसे बड़ा धर्म मानवता और करुणा है। पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करने के साथ हमें यह भी विचार करना चाहिए कि पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों का संयमित उपयोग और आपदा के समय परस्पर सहयोग हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। जैन दर्शन का "परस्परोपग्रहो जीवानाम्" का संदेश हमें इसी परस्पर सहयोग और सह-अस्तित्व की भावना से जोड़ता है। अहिंसा केवल किसी को शारीरिक कष्ट न पहुँचाने तक सीमित नहीं है, दूसरे की वेदना को अनुभव करना, संकट में सहायता के लिए आगे आना और प्रकृति के प्रति संवेदनशील रहना भी उसकी व्यापक अभिव्यक्ति है। (शेष पृष्ठ 4 में)

सम्पादकीय

सम्मेद शिखर : आस्था, मर्यादा और संवाद की आवश्यकता

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

श्री सम्मेद शिखर केवल झारखंड की पहाड़ियों में स्थित एक तीर्थ नहीं, बल्कि जैन धर्म की सनातन साधना-परंपरा का अत्यंत पवित्र केंद्र है। जैन मान्यता के अनुसार चौबीस तीर्थंकरों में से बीस तीर्थंकरों ने इसी पावन भूमि से निर्वाण प्राप्त किया। इसलिए दिगंबर, श्वेतांबर मूर्तिपूजक और श्वेतांबर स्थानकवासी-जैन धर्म की सभी परंपराओं के लिए सम्मेद शिखर समान श्रद्धा और आस्था का विषय है।

यहाँ एक तथ्य विशेष रूप से स्पष्ट किया जाना आवश्यक है। श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन परंपरा गैर-मूर्तिपूजक परंपरा है और साकार प्रतिमा-पूजा हमारी धार्मिक साधना-पद्धति का अंग नहीं है। किंतु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि स्थानकवासी समाज का जैन तीर्थों से कोई संबंध नहीं है। हमारी आस्था तीर्थंकरों के उन पावन स्थलों में है, जहाँ ऐतिहासिक और धार्मिक परंपराओं के अनुसार उनके कल्याणक, तपस्या, साधना अथवा निर्वाण जैसे महत्त्वपूर्ण प्रसंग घटित हुए। अतः जैन तीर्थ किसी एक संप्रदाय की संपत्ति नहीं, समूचे जैन समाज की साझा आध्यात्मिक विरासत हैं।

इसी दृष्टि से सम्मेद शिखर स्थानकवासी जैन समाज के लिए भी उतना ही श्रद्धेय है, जितना जैन धर्म की अन्य परंपराओं के लिए। हमारी पूजा-पद्धति अलग हो सकती है, लेकिन तीर्थंकरों के प्रति हमारी श्रद्धा और उनके पावन चरणों से जुड़े तीर्थों के प्रति हमारी आस्था समान है।

इन दिनों सम्मेद शिखर से संबंधित कुछ वीडियो और घटनाक्रम सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बने हुए हैं। तीर्थ की मर्यादा के प्रतिकूल आचरण, जूते-चप्पल सहित पर्वत पर जाना, मंदिर परिसर की सीढ़ियों पर अशोभनीय व्यवहार अथवा श्रद्धालुओं के साथ कथित अभद्रता जैसी बातें सामने आई हैं। किसी भी धर्मस्थल पर जाना अधिकार हो सकता है, लेकिन उसकी धार्मिक मर्यादा का सम्मान करना कर्तव्य है।

सम्मेद शिखर का प्रश्न इसलिए भी संवेदनशील है कि स्थानीय आदिवासी समाज की पारंपरिक मान्यताएँ और धार्मिक आस्थाएँ भी इस क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं। उनके विश्वास और सांस्कृतिक अधिकारों का सम्मान होना चाहिए। किंतु उसी के साथ हजारों वर्षों से चली आ रही जैन आस्था और इस पर्वत की जैन धार्मिक पहचान की रक्षा भी उतनी ही आवश्यक है। दोनों पक्षों के बीच प्रतिस्पर्धा नहीं, सम्मान और सह-अस्तित्व का मार्ग खोजा जाना चाहिए। (शेष पृष्ठ 5 में)

श्री मरूधर केसरी गुरूभ्यो नमः

देवानुप्रिय सेठ सा श्री माणकचंद सा श्रीमती रूप लता जी बोहरा की पावन स्मृति में

नरेश - बबिता, हर्ष - साधना, सौ. कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन - मुम्बई - जोधपुर

HaloVerse Entertainment Pvt Limited. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd.

जय गुरू रूप

जय गुरू मरूधर केसरी

जय गुरू सुकन

कोटिशः वंदन नमन

नरेश बोहरा जैन
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
कार्याध्यक्ष - पावन धाम, जैतारण, राजस्थान
7666540600 Jainn07@gmail.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री रामुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री जे. डी. जैन - गाजियाबाद, श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन - पाली, श्री अविनाश चोरड़िया जैन - नई दिल्ली, पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन - इंदौर, श्री पारस मोदी जैन - मुंबई, श्री आनंदमल छल्लानी जैन - चेन्नई, श्री अतुल जैन - दिल्ली, डॉ. अमित राय जैन - बडौत, श्री विनय जैन - पानीपत, श्री जसवंत जैन - दिल्ली, श्री संजीव हीरालाल जैन - लुधियाना, श्री महावीर रांका जैन - चेन्नई, श्री जयंती कुकड़ा जैन - सूरत, श्री विनोद कीमती - हैदराबाद, श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - दिल्ली, श्री रमेश भंडारी जैन - इंदौर, श्री कांति कुमार लोढ़ा जैन - औरंगाबाद, श्री नरेश बोहरा जैन - मुंबई, श्री प्रशांत जैन - दिल्ली, श्री कंवरलाल सूर्या जैन - भीलवाड़ा, श्री अशोक रांका जैन - बेंगलुरु, श्री रविन्द्रनाथ जैन - दिल्ली, श्री विपुल जैन - दिल्ली, श्री विलास राठौर जैन - पुणे, डॉ. अनामिका तलेसरा जैन - सूरत, श्री विजय जैन - पानीपत, श्री सुदर्शन जैन - दिल्ली, श्री शशिकांत पिंटू कर्नावट जैन - मालेगांव, श्रीमती संतोष जैन - दिल्ली, श्री अंकुर जैन - दिल्ली

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलूर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री संजय जैन, दिल्ली	98111 67770
श्री दिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहिल्यानगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहिल्यानगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मनीष वाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल बड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, बैजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, छत्रपति संभाजीनगर	94207 64456

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर बीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, छत्रपति संभाजीनगर	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिरड़वाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल बीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

अध्यक्ष : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456
चेयरमैन : श्री अंकुर जैन, दिल्ली	98711 98111
कार्याध्यक्ष : श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत	93745 44138
महामंत्री : श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	91522 11555
कोषाध्यक्ष : श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

अध्यक्षा : श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
चेयरमैन : श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत	94278 08401
वाईस चेयरमैन : श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली	98187 44166
वरिष्ठ उपाध्यक्षा : श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत	92515 74016
महामंत्री : श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना	79737 96548
कोषाध्यक्षा : श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश वुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री वी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाविया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री दिनेश चोरड़िया जैन, उदयपुर	94141 66639
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, छत्रपति संभाजीनगर	98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहिल्यानगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, पुलिया	94231 93447
श्री कैलाश प्रकाश वाफना जैन, छत्रपति संभाजीनगर	93726 66999
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदम्', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री विलोक जैन, दिल्ली	98681 06607

प्रांतीय महामंत्री

श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति

एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति

सदस्य : श्री संजय तारांचद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824

वरिष्ठ मार्गदर्शक

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330
श्री पदमचंद वागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391
श्री राजेश जैन, लुधियाना (पंजाब)	98761 71831
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)	98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश)	99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 72626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462
श्री बजरंगलाल जैन, दिल्ली	93122 62192
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385
श्री महावीर कुमार वाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अभ्वालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री यशवंत सिंह नाहमा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री हसमुख बंवकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहिल्यानगर (महाराष्ट्र)	
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेशवर (गुजरात)	99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री हीरालाल खाविया जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणित ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी म. की 85वीं जन्म जयंती के अवसर पर विशेष

आचार्य परम्परा की महान विभूति-श्री शिवाचार्य जी

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.

प्राचीन काल से हमारे भारत वर्ष में ऋषि मुनियों का विशेष स्थान रहा है। हमारी संस्कृति-सभ्यता-साहित्य आदि के उत्कर्ष में संत-महात्माओं का विशेष अवदान रहा है। बुद्ध हो, महावीर हो, श्रीकृष्ण के गुरु संदीपनि हो अथवा रामचंद्रजी के गुरुवसिष्ठ हो हमारे पूर्वजों ने संतो के पदचिन्हों पर चलने में ही अपने विकास और उत्कर्ष तथा हित का दर्शन किया है। महापुरुषों का जीवन साधना से ओतप्रोत रहा। इनका जीवन साधना-तप-त्याग से तेजस्वी एवं देदीप्यमान रहा है। इनके आदर्शों पर चलकर ही मानव ने अपने जीवन को अधिक सार्थक बनाया। मानव में रहे हुए देवत्व को परमात्म तत्व को प्रकट करना तथा उसकी विधि जन-जन को प्रदान करना यह कार्य इन साधकों का प्रमुख लक्ष्य रहा है।

इसी ऋषिमुनि परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाले तथा इसके सत्व को, सार को मुमुक्षु आत्माओं तक पहुंचाने वाले एक महान व्यक्तित्व है वर्तमान आचार्य श्री शिवमुनिजी म. आत्मज्ञानी, युगप्रधान आचार्य श्री श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर हैं। आगमज्ञाता प्रज्ञाशिखर पुरुश पूज्य श्री आत्माराम जी म. ने श्रमण संघ गठन के पश्चात प्रथम आचार्य के रूप में श्रमण संघ का कुशल नेतृत्व किया।

समग्र देश में व्याप्त श्रमण संघ यह स्थानकवासी आम्नाय का एक आदर्श संगठन है। इस संघ की अनेक महान विभूतियों का धर्म-शासन संघ को सुदृढ बनाने में अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इन महान संतो के साथ संघ का सुव्यवस्थित संचालन द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषि जी म. ने किया। उन्होंने अपने संयम-वाणी-व्यवहार के बल पर तीस वर्ष तक श्रमण संघ की धुरा का वहन किया। तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म. स्थानकवासी समुदाय के एक सम्माननीय हस्ताक्षर थे। आपकी साहित्य सेवा अद्भुत थी। आपने अपने अल्पकालीन आचार्यकाल में भी समस्त संघ में नवचेतना का संचार कर दिया था।

इस संघ की आचार्य के रूप में बागडोर आत्मज्ञानी आचार्य श्री को ई.स. 1999 में प्राप्त हुई। इक्कीसवें सदी के प्रारंभ में आपने संघ का नेतृत्व संभाला। अनेकों प्रतिकूलताओं तथा प्रतिरोध अवरोध के बावजूद आपने अपने साधना तथा सरलता के बल पर संघ में एक विशेष स्थान निर्माण किया। जिस प्रभु महावीर के संघ में हम सभी साधनारत हैं। उस शासनपति प्रभु महावीर के साधना में हम जुड़े यह एक उत्कृष्ट भाव आपश्री के भीतर है। आप वर्षों तक साधना के क्षेत्र में प्रयोगशील रहे। सम्पूर्ण देश में प्रचलित अनेक विधियों का आपने परीक्षण - निरीक्षण तथा दीर्घ प्रयोग किया। पूना सम्मेलन 1987 में ध्यान-साधना अनुसंधान, अन्वेषण की जिम्मेदारी भी श्रमणसंघ के मूर्धन्य महापुरुषों द्वारा आपश्री को प्रदान की गई। सम्मेलन में पारित प्रस्ताव में भी आपश्री का नाम शीर्षस्थ था।

आपने उस जिम्मेदारी को अपने निर्धारित लक्ष्य का ही एक अंग बनाया। मात्र प्रस्तावों में न रखकर प्रयोगिक स्तर पर जैन सिद्धांतो के अनुरूप साधना का स्वरूप निर्धारित कर दिया।

विगत दस वर्षों से आत्म-ध्यान साधना के रूप में जैन सिद्धान्त अनुरूप विधि विकसित की। पहले स्वतः इस साधना के स्वरूप को पूर्णतः अपनाकर बाद में इसे जन-जन तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया। आपके ध्यान शिविरों ने एक विशेष आत्मक्रांति का सूत्रपात किया है। आत्मलक्ष्यी, आत्मकेन्द्रित तथा भौतिक, लौकिक बाह्य आलम्बन, आकर्षण से मुक्त ऐसी साधना को आपने पाया और दिया है, दे रहे हैं। आपने जिस सामर्थ्य, परिश्रम एवं तपस्या से सम्मेलन में सौपी गई जिम्मेदारी को मूर्तरूप दिया, वह समस्त संघ के लिए आदर्शरूप तथा प्रेरणास्पद है। इस साधना से संबंधित अनेक अपप्रचार तथा झुठी अफवाहें में भी आपने अपने साधना की सत्यता और शुद्धता को सिद्ध किया है।

जैन साधना की विशेष विधा को आपके द्वारा दी गई चालना तथा मजबूती निश्चित ही एक अनूठा कदम है। आपकी यह साधना भगवान महावीर के सभी अनुयायियों के लिए दीपस्तंभवत् बनी है। आज की युवापीढी को भगवान महावीर के सिद्धांतो से परिचित बनाने के लिए यह साधना सेतुरूप बन सकती है।

आपकी 40 वर्षों से निरन्तर उपवास के वर्षीतप की आराधना तथा दीर्घश्रम से प्राप्त-प्रदत्त आत्मध्यान साधना से जन-जन के लिये आप आराध्य, श्रद्धेय बने हैं।

आचार्य भगवंत का मंगलमय सान्निध्य संघ, समाज, राष्ट्र विश्व को दीर्घकाल तक प्राप्त हो। उनके साधनामय मार्गदर्शन में भव्य मुमुक्षु आत्माओं की वीतराग साधना प्रशस्त बने। यही अरिहंत परमात्मा के श्री चरणों में प्रार्थना भावना।

शिवाचार्यश्री के जीवन की उपलब्धि

- प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीष मुनि जी म.सा.

आचार्य सम्राट पूज्य श्री डॉ. शिवमुनि जी म.सा. के जीव का इस भव में गर्भ से अवतरण 18 सितम्बर 1942 को हुआ। बचपन से ही जैनत्व के संस्कार मिले। आपके भीतर में पूर्व जन्मों की साधना होने के कारण एक प्यास थी कि प्रभु महावीर की साधना क्या थी, उसे मुझे आत्मसात करना है। बड़े सरल जीव हैं, इन्होंने सोचा जैन मुनि बनने से मुझे महावीर की साधना प्राप्त होगी, अतः 10 वर्षों के त्याग, वैराग्य के पश्चात्, आपको 30 वर्ष की उम्र में श्रमण संघीय सलाहकार महाश्रमण पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञान मुनि जी के माध्यम से आत्मकुल में जैन भागवती दीक्षा प्राप्त हुई।

साधना की खोज : दीक्षा पश्चात् आपने पंचम आरे का प्रभाव वर्तमान में देखा और आपने अपने चित्त को शोध कार्यों में लगाया। आपकी शोध का विषय था - भारतीय धर्मों में मोक्ष की अवधारणा विशेष जैन धर्म के सन्दर्भ में। शोध के पश्चात् आपने पाया की प्रभु महावीर तथा सभी बुद्धपुरुषों की साधना ध्यान की थी। आप गुरुदेव का आशीर्वाद लेकर भारत भ्रमण पर निकल पड़े। अनेकों ध्यान पद्धतियों का अनुभव ज्ञान आपने प्राप्त किया, किन्तु आप तृप्त नहीं हुए। आपके भीतर में प्यास थी की प्रभु महावीर की वो साधना क्या थी, जिससे उन्हें कानों में कीले ठोकने पर भी विभाव नहीं आया। गजसुकुमाल की वो साधना क्या थी जिसके कारण ऐसे उपसर्ग में भी वे केवली व सिद्ध हो गये। इसी प्यास ने आपकी शोध को गतिमान रखा।

महाविदेह की साधना : आप पर शासनदेव, शासन माता की कृपा हुई और आपको जिनशासन की आत्म-ध्यान, भेद विज्ञान की साधना प्राप्त हुई। आपकी विनम्रता व पात्रता से वर्तमान तीर्थंकर अरिहंत परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी की प्रत्यक्ष कृपा आप पर हुई, जिसमें निमित्त बनी अरिहंत आराधिका निषाजी। आप अरिहंत कृपा से पिछले 31 वर्षों से भेदविज्ञान, आत्म-ध्यान के प्रयोग आत्म कल्याण के लिए स्वयं तो कर ही रहे हैं और भवी जीवों के लिए पंचम आरे में चतुर्थ काल की साधना जन-जन के लिए उपलब्ध करवा रहे हैं।

कृतज्ञता : आत्मा को केन्द्रीभूत बनाकर पंचम आरे में सबसे बड़ी उपलब्धि प्राप्त करने वाले महापुरुष शिवाचार्य भगवन् के 85वें अवतरण दिवस पर हम भी अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि प्राप्त करके उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें तो हमारा जीवन सफल हो जाएगा।

प्रश्न होता है क्या है सबसे बड़ी उपलब्धि?

- क्या जैन कुल में जन्म होना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या जैन मुनि बन जाना, पीएचडी डॉक्टरेट करना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या शिष्य-प्रशिष्य बनाना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या आचार्य सम्राट का पद प्राप्त कर लेना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या 40 वर्षों से एकान्तर करना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या संपूर्ण भारत में विचरणशील साधु-साध्वियों को संगठित रखना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या अनेक पद, अवार्ड प्राप्त करना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या पूरे देश में विचरण कर, धर्म प्रभावना करना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी म.सा के द्वारा टीकाकृत आगमों का पुनः प्रकाशन करवाना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या देश-विदेशों में आत्म-ध्यान शिविर लगवाना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या आत्म-ध्यान केन्द्रों की स्थापना करवाना बड़ी उपलब्धि है?
- क्या अनेक साधु-साध्वियों को दीक्षा पाठ-पढाना बड़ी उपलब्धि है?

अरिहंत परमात्मा फरमाते हैं यह सब तो व्यक्तित्व से जुड़ी उपलब्धियां है। इससे जीव का कोई सम्बन्ध नहीं है।

तो फिर सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है?

- पंचम आरे में सबसे बड़ी उपलब्धि है स्वयं स्वरूप बोध प्राप्त कर निश्चय सम्यक्त्व को प्राप्त करना।
- चतुर्थ आरे की साधना को भरत क्षेत्र में लाने के लिए निमित्त बनना।
- कर्म क्षय करने की सर्वोत्कृष्ट साधना आत्म-ध्यान द्वारा जीव को जीव में स्थित कर अष्टगुणों की सम्पदा को प्रकट करने की साधना में आप सतत पुरुषार्थरत हैं। सभी को इस दिशा में पुरुषार्थ हेतु प्रेरित करना ये उपलब्धि है।
- भेद विज्ञान, कर्म सिद्धान्त अनेकान्तवाद को जीवन में आत्मसात कर चतुर्विध संघ के लिए आप एक मार्गदर्शक बन सबको दिशा-निर्देशन दे की ले रहे हैं।
- भरत क्षेत्र में पंचम आरे के नाम पर निश्चय धर्म गौण हो गया था व व्यवहार धर्म तक ही सीमित हो गया था, वहां पुनः जन-जन में निश्चय धर्म आत्म धर्म की प्रेरणा प्रदान करना।
- अस्तित्व को मुख्यता देते हुए व्यक्तित्व को गौण करना आपकी उपलब्धि है।
- त्याग, वैराग्य व वीतरागता की साधना आपके जीवन का लक्ष्य बन चुकी है।

हम भी इस दिशा में आगे बढें तो हमारा जीवन सफल होगा व आपका प्रकाशोत्सव मनाना सार्थक होगा।

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM • POLUR
JAIN SILKS & READYMADES • POLUR
Varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION • POLUR • TIRUVANNAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे) अध्याय 31

ऊर्जा का ऊपर से नीचे उतरना

(गहन विस्तार)

जब जीवन सिर में केंद्रित होता है, तो विचार प्रबल होते हैं। जब जीवन हृदय में केंद्रित होता है, तो भाव प्रबल होते हैं। जब जीवन नाभि और मूलाधार में स्थिर होता है, तो अस्तित्व का भरोसा प्रबल होता है। ऊर्जा का ऊपर से नीचे उतरना किसी आध्यात्मिक कल्पना का विषय नहीं, बल्कि अनुभव का परिवर्तन है।

1. ऊपर केंद्रित ऊर्जा : ऊपर की ऊर्जा का अर्थ है - अत्यधिक विश्लेषण लगातार योजना भविष्य की चिंता परिणाम - आसक्ति स्वयं को सिद्ध करने की प्रवृत्ति यह अवस्था थकाने वाली होती है। ऊपर का जीवन प्रयासपूर्ण होता है।

2. नीचे उतरने का अर्थ : ऊर्जा का नीचे उतरना जड़ता नहीं है। यह स्थिरता है। जब ध्यान नाभि और मूलाधार में आता है, तो भीतर एक शांत आधार बनता है। विचार समाप्त नहीं होते, पर उनका प्रभुत्व कम हो जाता है।

3. अवरोहण और समर्पण : ऊर्जा नीचे तभी उतरती है जब व्यक्ति थोड़ी नरमी लाता है। जब वह स्वीकार करता है-"मैं पूर्ण नियंत्रक नहीं हूँ।" "जीवन मुझसे बड़ा है।" यह स्वीकार समर्पण है। समर्पण कमजोरी नहीं, आधार है।

4. शरीर में अनुभव : ऊर्जा नीचे उतरते समय कुछ अनुभव हो सकते हैं-छाती का हल्का होना श्वास का गहरा होना नाभि में गर्माहट पैरों में स्थिरता यह संकेत हैं कि संतुलन लौट रहा है।

5. सिर की पकड़ ढीली होना : जब ऊर्जा सिर में अटकी हो, तो व्यक्ति हर अनुभव को समझना चाहता है। जब ऊर्जा नीचे आती है, तो समझने की जिद कम हो जाती है। अब अनुभव को सिर्फ अनुभव किया जा सकता है।

6. भावनाओं का पिघलना : ऊर्जा नीचे उतरते समय दबी हुई भावनाएँ उठ सकती हैं। हल्की उदासी आँखों में नमी भीतर शांति यह सब पिघलने की प्रक्रिया है।

7. अभ्यास : दिन में कुछ क्षण बैठकर यह अनुभव करें-श्वास लें। ध्यान सिर से नीचे लाएँ। छाती से होते हुए नाभि तक। फिर और नीचे, मूलाधार तक। कुछ न करें। केवल उतरने दें।

8. जीवन में प्रभाव : जब ऊर्जा नीचे स्थिर होती है, तो निर्णय शांत होते हैं। संबंध नरम होते हैं। भय कम होता है। प्रतिक्रिया घटती है। कर्ताभाव से साक्षी की ओर यह संक्रमण यहीं से संभव है।

9. प्रयास से सहजता तक : ऊपर की ऊर्जा प्रयास करती है। नीचे की ऊर्जा सहज होती है। ऊपर तनाव है। नीचे धारण है। ऊर्जा का अवरोहण जीवन को प्रयास से सहजता में बदल देता है।

10. अंतिम स्पष्टता : ऊर्जा का ऊपर से नीचे उतरना प्रमाद से प्रमोद की यात्रा का महत्वपूर्ण चरण है। जब ध्यान जड़ में स्थिर होता है, तो जीवन की शाखाएँ स्वाभाविक रूप से संतुलित होती हैं। अगले अध्याय में हम समझेंगे-कर्ता से साक्षी की ओर संक्रमण कैसे इस अवरोहण का स्वाभाविक परिणाम है। (क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

पश्चिमी जगत में तत्वार्थसूत्र और जैन दर्शन के एक समर्पित अध्येता : हर्मन कुहन

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

जैन दर्शन की वैश्विक यात्रा केवल भारतीय आचार्यों, साधु-साध्वियों और विद्वानों के प्रयासों से ही नहीं हुई, बल्कि अनेक विदेशी अध्येताओं ने भी जैन धर्म, दर्शन और साहित्य को समझने तथा उसे अपने समाज तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जर्मनी के विद्वान हर्मन कुहन (Hermann Kuhn) इसी अंतर्राष्ट्रीय जैन अध्ययन-परंपरा के उल्लेखनीय नाम हैं।

हर्मन कुहन का भारतीय दर्शन और अध्यात्म के प्रति आकर्षण उन्हें जैन दर्शन के गंभीर अध्ययन तक ले गया। भारतीय चिंतन परंपरा के अध्ययन के दौरान उन्होंने विशेष रूप से आचार्य उमास्वाति के तत्त्वार्थसूत्र को अपने चिंतन का केंद्र बनाया। उनके अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम उनकी पुस्तक The Key to the Center of the Universe है, जो तत्त्वार्थसूत्र के सूत्रों को आधुनिक भाषा और समकालीन बौद्धिक दृष्टि से समझाने का प्रयास करती है। जैन साहित्य के डिजिटल अभिलेख में यह पुस्तक हर्मन कुहन की कृति के रूप में दर्ज है और इसे Tattvartha Sutra से संबंधित ग्रंथ के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

कुहन की विशेषता यह रही कि उन्होंने जैन दर्शन को केवल धार्मिक आस्था के विषय के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि ज्ञान, चेतना, कर्म, आत्म-विकास और जीवन-दृष्टि के संदर्भ में समझने का प्रयास किया। उनकी पुस्तक में तत्त्वार्थसूत्र के प्रमाण और नय जैसे दार्शनिक सिद्धांतों की व्याख्या भी मिलती है। वे जैन ज्ञानमीमांसा के पारंपरिक सिद्धांतों को आधुनिक पाठक के लिए सुगम बनाने का प्रयास करते दिखाई देते हैं।

उनकी दूसरी उल्लेखनीय कृति Karma - The Mechanism है। स्वयं The Key to the Center of the Universe में इस पुस्तक का परिचय देते हुए इसे तत्त्वार्थसूत्र के कर्म-संबंधी प्रतिपादनों से जुड़ी कृति बताया गया है। कुहन ने कर्म को केवल दार्शनिक या धार्मिक अवधारणा के रूप में न लेकर मनुष्य के व्यवहार, जीवनानुभव और आत्म-विकास से जोड़कर समझाने का प्रयास किया।

कुहन का योगदान केवल लेखन तक सीमित नहीं था। जर्मनी में जैन धर्म के संगठनात्मक विकास और उसके अंतर्राष्ट्रीय परिचय में भी उन्होंने भूमिका निभाई। Jain Association International (Germany) के अध्यक्ष के रूप में उनका उल्लेख 1990 और 1995 के जैन सम्मेलन संबंधी अभिलेखों में मिलता है। 1995 के छठे विश्व जैन सम्मेलन के दस्तावेज में उन्हें "Jains in the 21st Century" विषयक सत्र के प्रमुख वक्ताओं में सम्मिलित किया गया था।

यह तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि उस दौर में पश्चिमी देशों में जैन धर्म का परिचय आज की अपेक्षा बहुत सीमित था। ऐसे समय में जर्मनी से जुड़े एक विदेशी विद्वान का जैन धर्म के अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रतिनिधित्व करना और जैन दर्शन की वैज्ञानिक, तार्किक तथा विश्लेषणात्मक विशेषताओं पर चर्चा करना अपने आप में महत्त्वपूर्ण योगदान था।

कुहन का अध्ययन विशेष रूप से इस बात की ओर संकेत करता है कि जैन दर्शन की शक्ति उसकी सार्वभौमिकता में निहित है। जीव और चेतना, कर्म और आत्मानुशासन, अहिंसा और सह-अस्तित्व जैसे विषय किसी एक देश या समुदाय तक सीमित नहीं हैं। संभवतः यही सार्वभौमिकता पश्चिमी विद्वान के रूप में कुहन को जैन दर्शन के अध्ययन की ओर आकर्षित करने वाली प्रमुख प्रेरणा बनी।

उनकी कृतियों का महत्त्व इस दृष्टि से भी है कि उन्होंने जैन धर्म के कठिन दार्शनिक सिद्धांतों को आधुनिक पाठक के सामने अपेक्षाकृत सरल और व्याख्यात्मक शैली में रखने का प्रयास किया। The Key to the Center of the Universe में तत्त्वार्थसूत्र के ज्ञान और चेतना संबंधी प्रतिपादनों को जिस प्रकार समकालीन शब्दावली में समझाया गया है, वह जैन दर्शन को पश्चिमी बौद्धिक परिवेश में प्रस्तुत करने का एक विशिष्ट प्रयास कहा जा सकता है।

हर्मन कुहन का जीवन और कार्य इस बात का प्रमाण है कि जैन दर्शन की यात्रा भारत की सीमाओं से बहुत आगे तक पहुँच चुकी है। उन्होंने जैन साहित्य के एक महत्त्वपूर्ण दार्शनिक ग्रंथ तत्त्वार्थसूत्र को अपने अध्ययन का आधार बनाया और उसके माध्यम से जैन चिंतन के ज्ञान, चेतना और कर्म जैसे मूलभूत सिद्धांतों को पश्चिमी पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया।

संदर्भित प्रमुख कृतियाँ एवं अभिलेख : 1. The Key to the Center of the Universe - Hermann Kuhn Crosswind Publishing, Germany- यह पुस्तक तत्त्वार्थसूत्र से संबंधित है और जैन ज्ञानमीमांसा तथा चेतना के विभिन्न आयामों की आधुनिक व्याख्या प्रस्तुत करती है। 2. Karma - The Mechanism - Hermann Kuhn कुहन की इसी पुस्तक में इस कृति का परिचय तत्त्वार्थसूत्र के कर्म-संबंधी प्रतिपादनों से जुड़े अध्ययन के रूप में मिलता है। 3. Sixth World Jain Conference, 1995- सम्मेलन के अभिलेख में Hermann Kuhn को Jain Association International (Germany) के अध्यक्ष तथा Jains in the 21st Century सत्र के प्रमुख वक्ताओं में दर्ज किया गया है।

जैन दर्शन के विदेशी अध्येताओं में हर्मन कुहन का स्थान इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने जैन धर्म को केवल भारत की धार्मिक परंपरा के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसके दार्शनिक और सार्वभौमिक मानवीय संदेश को समझने और पश्चिमी समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया। उनका अध्ययन यह स्मरण कराता है कि जैन दर्शन की अहिंसा, अनेकांत, कर्म और आत्मचेतना की अवधारणाएँ आज भी विश्व के किसी भी गंभीर चिंतक को आकर्षित करने की क्षमता रखती हैं।

(पृष्ठ 1 का शेष 'अध्यक्षीय') आज समाज को ऐसी शिक्षा चाहिए जो ज्ञान के साथ संस्कार दे, ऐसी कर्मशीलता चाहिए जो सफलता के साथ उत्तरदायित्व जोड़े और ऐसी धार्मिक चेतना चाहिए जो आराधना के साथ सेवा एवं करुणा को जीवन का अंग बनाए।

आइए, इन प्रसंगों से प्रेरणा लेते हुए हम संकल्प लें कि अपने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे, कर्तव्य को निष्ठापूर्वक निभाएँगे, प्रकृति के प्रति संयमित व्यवहार करेंगे और प्रत्येक पीड़ित मानव के प्रति सेवा एवं संवेदना का भाव रखेंगे। ज्ञान से विवेक, कर्तव्य से चरित्र और करुणा से मानवता का निर्माण हो-यही हमारे जीवन और समाज की सच्ची प्रगति है।

नेपाल की प्राकृतिक आपदा से प्रभावित सभी परिवारों के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की हार्दिक संवेदनाएँ। परमात्मा से प्रार्थना है कि प्रभावित जनों को इस कठिन समय का सामना करने की शक्ति मिले तथा परिस्थितियाँ शीघ्र सामान्य हों।

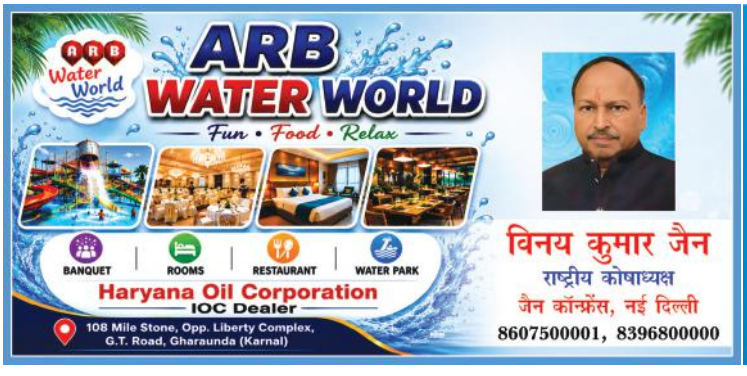

पुरस्कार का सत्य : सत्य का पुरस्कार

प्रिय बालको! अक्सर आपने यह वाक्य सुना होगा कि - 'सत्य भगवान है।' सत्य इसलिए भगवान है कि उससे विश्वास उत्पन्न होता है। सत्य बोलने वाले व्यक्ति सभी जगह सभी लोगों से प्रेम, सम्मान और श्रद्धा प्राप्त करते हैं। सत्य वही बोल सकता है जिसके जीवन में बुराइयाँ नहीं हैं। हाँ, यदि कुछ बुराइयाँ उसके जीवन में हैं भी, तो सदा सत्य बोलने से वे बुराइयाँ धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं। जिसमें कोई भी बुराई नहीं होती, अच्छाई ही अच्छाई होती है, वही तो ईश्वर होता है।

'भूल होना', मानवीय स्वभाव है। 'भूल' को झूठ बोलकर छिपाना, अमानवीय है। सरल हृदय से अपनी भूल को भूल स्वीकार कर लेना, यह श्रेष्ठ मानव की पहचान है। यहाँ दी गई गोपाल कृष्ण गोखले की कहानी हमें यही शिक्षा दे रही है।

प्रसंग उस समय का है जब गोपाल कृष्ण गोखले बाल्यावस्था में थे। स्कूल जाते थे। एक दिन उनके अध्यापक ने गणित के कुछ सवाल घर से हल करके लाने को कहा। घर पहुँच कर गोखले सवाल हल करने बैठे तो कठिनाई अनुभव करने लगे। उन्हें कुछ सवाल आते थे और कुछ नहीं। कठिन प्रश्नों को देखते हुए वे सोच रहे थे कि कल स्कूल में क्या होगा! आगामी अपमान उनके लिए आतंक बनकर खड़ा था। वे अपने एक सहपाठी के घर गए। उससे उसकी कॉपी माँगी और जो सवाल उन्हें नहीं आ रहे थे, उनके हल उस कॉपी से अपनी कॉपी में उतार लिए।

अगले दिन अध्यापक ने सब की कापियाँ जाँचीं। यह देखकर वे निराश हो रहे थे कि एक भी विद्यार्थी ऐसा नहीं, जिसके सभी सवाल सही हों। गोखले की कॉपी जाँच लेने पर वे उत्साह से भर गए। पूरी कक्षा में एक ही विद्यार्थी ऐसा मिला, जिसके एक भी हल में गलती न थी। अध्यापक ने गोखले को पुकारा। अपने पास बुलाया। प्यार किया। शाबाशी दी। कहा - 'एक तुम ही हो जिसने सब सवाल सही किए हैं। मैं तुम्हें इनाम दूँगा।'

यह सुनकर गोखले की आँखों से आँसू बहने लगे। कण्ठ भर आया। अध्यापक ने देखा तो पूछा - 'क्या बात है? रो क्यों रहे हो?' 'इनाम का हक मेरा नहीं मास्टर जी..... मैंने कुछ..... कुछ प्रश्न.... मित्र की कॉपी से उतारे हैं..... इनाम का हकदार तो वो है....।' गोखले ने बताया।

इस सच से प्रभावित होकर अध्यापक ने गोखले को सत्य के लिए तथा उनके मित्र को कठिन सवालों के हल के लिए पुरस्कार देने की घोषणा की। गोखले को पुरस्कृत करते हुए अध्यापक की आँखें नम हो आईं। संभवतः इसलिए कि उन्हें एक सच्चा शिष्य मिल गया था।

'सत्य मनुष्य की बहुत बड़ी आत्मिक शक्ति है। सत्य से मनुष्य निर्भय और साहसी बनता है। विकास के लिए यह साहस अनिवार्य है। यह सत्य-निष्ठा ज्ञान के द्वार खोलती है। ज्ञान प्राप्त कर आगे बढ़ना चाहते हो तो जीवन में सत्य की आराधना करो। भरी सभा में भी अपनी गलतियाँ स्वीकार करने में संकोच मत करो। सत्य की स्वीकृति से तुम एक दिन अवश्य महान बन जाओगे!'

श्रमण संघीय पूज्य संत परंपरा का एक दुर्लभ चित्र श्रृंखला...

चित्र परिचय-सन् 1937-38

1. प्रवर्तक श्री ताराचंदजी म.सा.
2. प्रवर्तक श्री किशनलालजी म.सा.
3. मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी म.सा.
4. पूज्य श्री ताराचन्दजी म.सा.
5. प्रवर्तक श्री सूर्यमुनि जी म.सा.
6. तपस्वी श्री केसरीमलजी म.सा.
7. शतावधानी श्री केवलमुनि जी म.सा.
8. श्री सागरमुनि जी म.सा.
9. श्री हीरामुनिजी म.सा.
10. पूज्य श्री मानक मुनि जी म.सा.

वैराग्य अवस्था से :

11. सुरेन्द्रमुनि म.सा.
12. रूपेन्द्रमुनि म.सा.
13. सेवक

चित्र सौजन्य : श्रमण संघीय प्रवर्तक श्री प्रकाश मुनिजी म.सा., संदर्भ : शहजाद राय शोध संस्थान बड़ौत

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') पूर्व में सम्मेद शिखर को पर्यटन क्षेत्र बनाए जाने को लेकर जैन समाज का व्यापक आंदोलन और पारसनाथ पर्वत को लेकर आदिवासी समाज की अपनी मांगें सामने आ चुकी हैं। यह स्पष्ट संकेत है कि विषय अत्यंत संवेदनशील है। इसलिए इसे सोशल मीडिया के आक्रोश, आरोप-प्रत्यारोप और भीड़ की प्रतिक्रिया के भरोसे छोड़ना उचित नहीं होगा।

सरकार, स्थानीय प्रशासन, तीर्थ प्रबंधन, जैन समाज के प्रतिनिधियों तथा स्थानीय आदिवासी समाज के जिम्मेदार बुद्धिजीवियों के बीच स्थायी संवाद-व्यवस्था बनाई जानी चाहिए। राष्ट्रीय स्तर के सामाजिक-सांस्कृतिक नेतृत्व की सकारात्मक मध्यस्थता भी इस दिशा में उपयोगी हो सकती है। तीर्थ की मर्यादा, पूजा-क्षेत्र, पर्यटन गतिविधियों, सुरक्षा और स्थानीय धार्मिक परंपराओं के संबंध में स्पष्ट आचार-संहिता बनाई जाए, ताकि भविष्य में किसी पक्ष की भावनाएँ आहत न हों।

आज सबसे बड़ी आवश्यकता भविष्य की चिंता करने की है। सोशल मीडिया के युग में छोटी-सी घटना देखते ही देखते सामुदायिक तनाव का कारण बन सकती है। इसलिए किसी भी संभावित विवाद को समय रहते संवाद के माध्यम से समाप्त करना आवश्यक है।

सम्मेद शिखर किसी एक संप्रदाय का नहीं, जैन समाज की साझा आध्यात्मिक विरासत है और उसकी मर्यादा की रक्षा भी हम सबकी साझा जिम्मेदारी है। जैन धर्म ने हमें अनेकांत, अहिंसा और संवाद का मार्ग दिखाया है। उसी मार्ग पर चलते हुए हमें ऐसा समाधान खोजना होगा, जिसमें जैन आस्था सुरक्षित रहे, स्थानीय आदिवासी समाज की गरिमा बनी रहे और भारत की सह-अस्तित्व की महान परंपरा और अधिक मजबूत हो। विवाद को विस्तार देना समाधान नहीं, संवाद को विस्तार देना ही समाधान है।

जैन भवन नई दिल्ली में शहजाद राय शोध संस्थान बड़ौत द्वारा 'विरासत' जैन पांडुलिपि एवं साहित्य प्रदर्शनी का आयोजन!

उद्घाटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह श्री अरुण कुमार जी ने किया!

नई दिल्ली : जैन भवन, गोल मार्केट, नई दिल्ली में शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत में संरक्षित प्राचीन जैन पांडुलिपियों एवं दुर्लभ जैन साहित्य की विशेष प्रदर्शनी 'विरासत' का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह श्री अरुण कुमार जी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन ने की।

इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री सुरेंद्र जैन, जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र के निदेशक श्री आशुतोष भटनागर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ केंद्रीय टोली के सदस्य श्री मुकुल कानिटकर, ऑर्गनाइजर वीकली के चीफ एडिटर श्री प्रफुल्ल केतकर सहित जैन समाज के अनेक विद्वान, बुद्धिजीवी एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। जैन कॉन्फ्रेंस के मुख्य समन्वयक श्री प्रशांत जैन तथा किताब वाले प्रकाशन समूह के एमडी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

देश के विभिन्न राज्यों-ओडिशा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि से जैन विमर्श के लिए एकत्रित विद्वानों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रदर्शित दुर्लभ पांडुलिपियों, प्राचीन ग्रंथों एवं जैन साहित्य को देखकर विद्वानों ने कहा कि इन पांडुलिपियों में भारतीय ज्ञान-परंपरा, दर्शन और संस्कृति से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण रहस्य एवं तथ्य निहित हैं। यह पांडुलिपि-संपदा भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अमूल्य धरोहर है तथा शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत, भारत की दुर्लभ पांडुलिपि-संपदा के संरक्षण का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है।

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए श्री अरुण कुमार जी ने कहा कि जैन पांडुलिपियां और प्राकृत भाषा में लिखा गया जैन साहित्य भारत की सभ्यता, संस्कृति तथा प्राचीन ज्ञान-प्रणाली का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ऐसी दुर्लभ ज्ञान-संपदा को सुरक्षित एवं संरक्षित किया जाना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। शहजाद राय शोध संस्थान द्वारा संरक्षित यह संपदा अत्यंत दुर्लभ और प्रेरणादायी है। उन्होंने इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए संस्थान के संस्थापक निदेशक डॉ. अमितराय जैन के प्रति आभार व्यक्त किया।

'विरासत' प्रदर्शनी ने यह संदेश भी दिया कि जैन पांडुलिपियां केवल धार्मिक साहित्य नहीं, बल्कि भारत के दर्शन, भाषा, कला, इतिहास, विज्ञान, सामाजिक जीवन और समन्वयवादी सांस्कृतिक परंपरा को समझने के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इनका संरक्षण आने वाली पीढ़ियों के लिए भारत की प्राचीन ज्ञान-विरासत को सुरक्षित रखने का कार्य है।

धार्मिक परीक्षा बोर्ड अहिल्यानगर द्वारा धार्मिक परीक्षाएं 26 अक्टूबर से

अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) : परम श्रद्धेय, राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट् गुरुदेव पू. श्री आनंदऋषि जी म. के सदुपयोग से संस्थापित श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड आनंदधाम, अहिल्यानगर द्वारा संचालित धार्मिक उपाधि परीक्षाएं जैन सिद्धांत विशारद, जैन सिद्धांत प्रभाकर, जैन सिद्धांत शास्त्री, जैन सिद्धांतार्य दिनांक 26 अक्टूबर से प्रारंभ हो रही हैं। आवेदन जमा करने की अंतिम अवधि 15 सितम्बर है। पता : श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, 'आनंदधाम', आचार्य आनंदऋषि जी म.सा. मार्ग, अहिल्यानगर - 414 001 (महाराष्ट्र) है।

संपर्क : पंडित योगेन्द्र त्रिपाठी : 81491 65192

श्रमण संघीय जैन पर्व

4 सितम्बर : उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म. 'कमल' - जन्म जयंती
8 सितम्बर : पयुर्षण महापर्व प्रारंभ
15 सितम्बर : संवत्सरी महापर्व
18 सितम्बर : आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी म. - जन्म दिवस
23 सितम्बर : आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म. - जन्म जयंती
26 सितम्बर : उपाध्याय श्री मूलमुनि जी म. - स्मृति दिवस
28 सितम्बर : महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' - स्मृति दिवस

लौकिक एवं राष्ट्रीय पर्व

4 सितम्बर : श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
5 सितम्बर : शिक्षक दिवस
14 सितम्बर : हिन्दी दिवस
15 सितम्बर : गणेश चतुर्थी
17 सितम्बर : विश्वकर्मा जयंती
25 सितम्बर : अनन्त चतुर्दशी
26 सितम्बर : श्राद्ध पर्व प्रारंभ

जैन समाज के गौरव श्री शिरीष रविंद्र जैन (आईपीएस) को राष्ट्रपति पुलिस पदक

नई दिल्ली : महाराष्ट्र के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी एवं 1999 बैच के अधिकारी श्री शिरीष जैन को उत्कृष्ट सेवा, साहस, समर्पण एवं कुशल नेतृत्व के लिए देश के सर्वोच्च पुलिस सम्मानों में से एक राष्ट्रपति पुलिस पदक (PSM) से सम्मानित किया गया है। यह उपलब्धि समूचे जैन समाज के लिए गौरव एवं हर्ष का विषय है। श्री जैन वर्तमान में महाराष्ट्र के गुप्तवार्ता आयुक्त एवं अतिरिक्त पुलिस महासंचालक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने नक्सल प्रभावित गड़चिरोली जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में उपविभागीय पुलिस अधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक के रूप में उल्लेखनीय सेवाएं दीं तथा माओवादी विरोधी अभियानों में प्रभावी नेतृत्व किया।

कर्तव्यनिष्ठा, निर्भीकता और राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित होना न केवल श्री शिरीष जैन की व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि जैन समाज के लिए भी गौरवपूर्ण क्षण है। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

पू. श्री राकेशमुनि जी म. का अनुकरणीय एवं प्रेरणादायक डांगावास चातुर्मास

डांगावास मेड़ता (राजस्थान) : पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव श्री रूपचंद जी म. के शिष्य पंडित रत्न पू. श्री राकेशमुनि जी महाराज जैन धर्म की शिक्षाओं का विस्तार कर रहे हैं। डांगावास मेड़ता सिटी के पास राजस्थान एक जाट बाहुल्य गांव है। वहाँ जैनियों का एक भी घर नहीं है। उनका चातुर्मास गैर जैन विशेष रूप से जाट समुदाय के लोगों द्वारा किया जा रहा है। वे युवाओं को मांसाहार और नशे से मुक्ति के लिए प्रयास कर रहे हैं। करोड़ों रूपये चातुर्मास पर खर्च कर केवल जैनियों को अपरिग्रह और त्याग के प्रवचन करवा रहे हैं। जैन समाज को पूज्य राकेश मुनि जी महाराज से सीखना चाहिए कि वे कैसे कम से कम खर्चे पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उनके प्रभाव से लाखों अजैन मांसाहार और नशा छोड चुके हैं, बड़े मध्यम शहरों की बजाय छोटे-छोटे गांवों में ही चातुर्मास करते हैं।

प्रेषक : मंगल कोठारी

रोहिणी में जैन स्थानक का शिलान्यास

दिल्ली : श्री एस.एस. जैन सभा, सेक्टर-24, रोहिणी, दिल्ली के तत्वावधान में जैन स्थानक के शिलान्यास समारोह का आयोजन श्रद्धा एवं उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री रविंद्र इंद्राज सिंह भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल एवं सराहनीय संचालन श्री सुरेश कुमार जैन बिजली वालों द्वारा किया गया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेंद्र जैन, महामंत्री श्री ललित ओसवाल जैन, कार्यकारी महामंत्री श्री संदीप जैन सोनू सहित अनेक पदाधिकारियों ने सहभागिता करते हुए समाज को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित कीं। सभी ने आशा व्यक्त की कि यह भव्य जैन स्थानक शीघ्र ही मूर्त रूप लेकर समाज की धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बनेगा।

सभी उपस्थितजनों ने इस पुनीत कार्य के लिए श्री एस.एस. जैन सभा एवं समस्त समाज को हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएं प्रेषित की।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर मामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste
Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

तत्त्वचिंतक उपप्रवर्तक श्री पारस मुनि जी महाराज को भावभीनी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली : प्रेम भवन जैन स्थानक, करोलबाग में तत्त्वचिंतक उपप्रवर्तक श्री पारस मुनि जी महाराज के देवलोकगमन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन एस. जैन सभा, करोलबाग के तत्त्वावधान में उपाध्याय प्रवर श्री रवींद्र मुनि जी महाराज के सान्निध्य में हुआ। सभा में वाचनाचार्य उपाध्याय श्री विशाल मुनि जी महाराज, प्रज्ञा महर्षि श्री उपेंद्र मुनि जी महाराज, श्री रितेश मुनि जी महाराज, श्री सतीश मुनि जी महाराज सहित अनेक संतवृंद तथा साध्वी श्री जितेंद्र कुमारी जी आदि साध्वीवर्ग एवं दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में विराजित साधु-साध्वियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन की विशेष उपस्थिति रही। दिल्ली स्थानकवासी जैन महासंघ के अध्यक्ष श्री शांतिकुमार जैन एवं उनकी कार्यकारिणी तथा दिल्ली जैन कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री जितेंद्र जैन एवं कार्यकारिणी के सदस्यों ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की। संतवृंद एवं वक्ताओं ने श्री पारस मुनि जी महाराज के त्याग, तप, साधना, मौन, तत्त्वचिंतन तथा सरल-सहज व्यक्तित्व का स्मरण करते हुए कहा कि उनका जीवन साधना और आत्मानुशासन की प्रेरणादायी मिसाल था। उपस्थित श्रद्धालुओं ने उनके जीवन-मूल्यों को आत्मसात करने का संकल्प लेते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रेषक : प्रो. रोशनलाल जैन, महामंत्री-जैन सभा, करोल बाग

गुरुद्वय की जन्मजयंती पर पाली में आस्था का महासंगम, हजारों श्रद्धालुओं ने दी भावांजलि

पाली (राजस्थान) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, रुई कटला, पाली की ओर से श्रमण सूर्य, दिव्य विभूति, भारत भूषण, आशुकवि वरिष्ठ प्रवर्तक, श्रद्धेय मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी महाराज साहब की 136वीं जन्मजयंती एवं लोकमान्य राष्ट्रसंत, शेर-ए-राजस्थान, अहिंसा दिवाकर, प्रज्ञा पुरुषोत्तम, वरिष्ठ प्रवर्तक पूज्य श्री रूपचंदजी महाराज साहब की 97वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित अष्ट दिवसीय कार्यक्रम का अंतिम दिवस श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक उल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ।

समारोह मरुधरा भूषण पूज्य प्रवर्तक श्री सुकनमुनि जी म., उपप्रवर्तक श्री अमृतमुनि जी म., युवा प्रणेता श्री महेशमुनि जी म., श्री अखिलेशमुनि जी म., डॉ. वरुणमुनि जी म. तथा महासती श्री उमरावकंवर जी, डॉ. प्रीतिसुधा जी एवं साध्वी संयमसुधा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। समारोह का शुभारंभ जैन धर्म के पंचरंगी ध्वज के आरोहण से हुआ। गुरु गुणगान समारोह में प्रवर्तक श्री सुकनमुनि महाराज ने कहा कि गुरुदेव मरुधर केसरी महाराज जन-जन की आस्था के केंद्र थे। उनकी वाणी में निर्भीकता और उनके वचनों में अद्भुत प्रभाव था। लोकसंत के रूप में प्रतिष्ठित रूपमुनि महाराज का जीवन प्रारंभ से ही गुरु भक्ति के साथ समाज सेवा, गौ सेवा और राष्ट्र सेवा को समर्पित रहा। उनका जन्मोत्सव मनाना संघ और समाज के लिए गौरव एवं सौभाग्य की बात है।

शिखर जन्मोत्सव दिवस पर देशभर के विभिन्न नगरों और गांवों से गुरुभक्त पाली पहुंचे। चेन्नई, बेंगलुरु, दिल्ली, हैदराबाद, मुंबई, जयपुर, जोधपुर, ब्यावर, सादड़ी, पीपाड़, बिलाड़ा, जैतारण, सोजत सहित अनेक स्थानों से संघ एवं गुरुभक्त समारोह में शामिल हुए।

समारोह का विशेष आकर्षण मुख्य गौतम प्रसादी रही, जिसमें लगभग 5500 श्रद्धालुओं ने प्रसादी का लाभ लिया। समारोह में बाहर से पधारे अतिथियों एवं विभिन्न संघों का संघ की ओर से साफा, माला एवं शाल द्वारा बहुमान किया गया। प्रेषक : विकास संचेती

गुरु गुणानुवाद करने देश के विभिन्न क्षेत्रों से गुरुभक्त पहुंचे हैदराबाद

हैदराबाद (तेलंगाना) : गुरुदेव श्रमण सूर्य मरूधर केसरी प्रवर्तक पूज्य श्री मिश्रीमलजी म.सा. की 136वीं जन्म जयंति एवं लोकमान्य संत शेरे-राजस्थान वरिष्ठ प्रवर्तक श्री रूपचंदजी म.सा. 'रजत' की 98वीं जन्म जयंति के उपलक्ष्य में युवा तपस्वी पूज्य मुकेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ खैरताबाद एवं श्री मरूधर केसरी रूप सुकन चातुर्मास समिति त्रयनगर के तत्वावधान में आयोजित आठ दिवसीय महोत्सव के तहत गुणानुवाद का मुख्य कार्यक्रम श्री मरूधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति त्रयनगर के तत्वावधान में भाग्यनगर गौशाला में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में साध्वी मंडल का सान्निध्य मिलने से चतुर्विद संघ का समागम हुआ। गुरुओं के प्रति श्रद्धा व भक्ति भाव से ओतप्रोत इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए हैदराबाद के साथ देश के विभिन्न क्षेत्रों से गुरुभक्त पहुंचे। प्रेषक : निलेश कांठेड़

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

महासाध्वी पू. श्री मंजूज्योति जी म. का देवलोकगमन

यमुनानगर (हरियाणा) : उत्तर भारत की महान श्रमणी एवं संयम-साधिका महासाध्वी पू. श्री प्रवेशकुमारी जी म.सा. की सुशिष्या महासाध्वी पू. श्री मंजूज्योति जी म.सा. का 65 वर्ष की अवस्था में मुकुंदलाल सिविल अस्पताल, यमुनानगर में सायं 4:30 बजे देवलोकगमन हो गया। महासाध्वी जी ने अपने संयम एवं साधना का पूर्ण निष्ठा से पालन करते हुए अस्वस्थता को भी धैर्य और सहनशीलता के साथ स्वीकार किया तथा शांत भावों से देह का त्याग किया। उनका संयममय एवं तपोमय जीवन सदैव प्रेरणास्त्रोत रहेगा। प्रेषक : राकेश जैन

सुश्रावक श्री संजय बैद का निधन

रायपुर (छत्तीसगढ़) : सुश्रावक श्री संजय जी बैद (सुपुत्र श्री तेजकरण जी बैद वर्तमान में श्री सार्थक मुनीजी म. के सांसारिक बड़े सुपुत्र) का शुक्रवार 21 अगस्त को रात्रि में निधन हो गया। प्रेषक : बैद परिवार, रायपुर

श्री उदयप्रकाश जी मादरेचा जैन का निधन

मुंबई (महाराष्ट्र) : मुंबई, कड़िया निवासी विरार प्रवासी श्री उदयप्रकाशजी मोहनलालजी मादरेचा जैन का आकस्मिक निधन गुरुवार 27 अगस्त को हो गया।

प्रेषक : मादरेचा परिवार कड़िया-विरार

श्री पदमचंद बोहरा जैन का स्वर्गवास

हैदराबाद (तेलंगाना) : श्री पदमचंद बोहरा जैन सुपुत्र स्व. श्री बुधराज बोहरा जैन, निवासी अमीरपेट, हैदराबाद का दिनांक 31 अगस्त को प्रातः 6:00 बजे आकस्मिक हृदयगति रूकने से निधन हो गया। प्रेषक : बोहरा परिवार

शताधिक श्रावक-श्राविकाएँ बारह व्रतधारी बने

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्रमण संघीय भीष्मपितामह तपस्वी रत्न पूज्य गुरुदेव श्री सुमतिप्रकाशजी महाराज साहब के सुशिष्य आगम ज्ञाता वाणी के जादूगर पूज्य डॉ समकित मुनि जी महाराज साहब की प्रेरणा व सान्निध्य में एवं जीवन संजीवनी बैंगलोर चातुर्मास समिति 2026 के तत्वावधान में वी.वी. पुरम बैंगलोर स्थित महावीर धर्मशाला में त्रिदिवसीय 'आओ श्रावक बने कार्यशाला' आयोजित की गई। चेन्नई के 12 व्रतधारी श्रावक डॉ एम.उत्तमचन्द गोठी के निर्देशन में अलग-अलग तीन विभाग में आयोजित इस कार्यशाला में हैदराबाद, बैंगलोर, मैसूर, पुणे, इंदौर, कोप्पल, शिरूर, औरंगाबाद, चित्तौड़, नासिक, अहमदनगर, भीलवाड़ा आदि देशभर के लगभग 225 से भी ज्यादा पंजीकृत श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

दिनाँक 20 अगस्त को पूज्य गुरुदेव श्री फूलचंदजी महाराज की जन्म शताब्दी शुभारंभ के मंगलमय प्रसंग पर लगभग 100 से भी ज्यादा श्रावक-श्राविकाओं ने धर्मसभा में खड़े होकर देव-गुरु-धर्म की साक्षी से जघन्य एक उत्कृष्ट बारह ही व्रत ग्रहण कर पाँचवे गुणस्थान में प्रवेश किया। साथ ही अनेक श्रावक श्राविकाओं ने दैनिक चौदह नियम के पच्चक्खाण ग्रहण किये। प्रेषक : एम. उत्तमचन्द गोठी जैन

J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन
चेयरमैन अभय जैन
महामंत्री अतुल जैन
कोषाध्यक्ष अमित जैन
जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।
MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 01-09-2026
Date of Posting : 07/08-09-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 25 ✲ पृष्ठ : 8
माह : सितम्बर ✲ सप्ताह : 01 सितम्बर से 07 सितम्बर

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

राष्ट्रसेवक और स्थानकवासी जैन धर्म के दैदीप्यमान नक्षत्र : श्री कुंदनमलजी फिरोदिया जैन

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

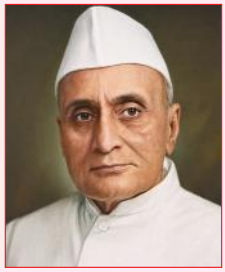

श्री कुंदनमलजी फिरोदिया का जन्म सन् 1885 में अहमदनगर के एक संभ्रांत ओसवाल जैन परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री सोभाचंद जी धर्मनिष्ठ और न्यायप्रिय व्यक्ति थे। कुंदनमलजी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। उन्होंने सन् 1907 में पूना के प्रसिद्ध फर्ग्युसन कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और इसके बाद वकालत की उच्च परीक्षा (LL.B.) उत्तीर्ण की।

कॉलेज के दिनों में वे स्वतंत्रता संग्राम की गरम दल के नायक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के संपर्क में आए और उनके विचारों के पक्के अनुयायी बन गए। युवा कुंदनमलजी के भीतर कूट-कूट कर राष्ट्रभक्ति भरी थी। उन्होंने अपनी वकालत को धन कमाने का जरिया न बनाकर प्रामाणिकता, न्याय और राष्ट्रीय चेतना जगाने का माध्यम बनाया।

गौरवशाली राजनीतिक सफर-'प्रथम पंक्ति के राष्ट्र-सेवक' : अहमदनगर जिले के राजनीतिक इतिहास में कुंदनमलजी का नाम 'प्रथम पंक्ति के राष्ट्र-सेवक' के रूप में अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। महात्मा गांधी का साथ-वर्ष 1927 में जब महात्मा गांधी अहमदनगर के दौरे पर आए, तब कुंदनमलजी ने उनके साथ पूरे जिले का सघन दौरा किया और स्वाधीनता आंदोलन के लिए 'तिलक स्वराज फंड' में भारी धनसंग्रह कर ऐतिहासिक योगदान दिया।

बॉम्बे असेंबली के गरिमामय अध्यक्ष : सन् 1937 में वे प्रांतीय काउंसिल के चुनाव में अपने प्रांत से एम.एल.ए. (M.L.A.) चुने गए। उनकी विद्वता और निष्पक्ष आचरण को देखते हुए उन्हें अविभाजित बहम्बे लेजिस्लेटिव असेंबली (मुंबई धारा-सभा) का अध्यक्ष (Speaker) नियुक्त किया गया। स्वतंत्रता के संक्रमण काल (1946 से 1952) के दौरान उन्होंने इस बेहद पेचीदा और जिम्मेदार पद को संभाला। सदन के संचालन में उनकी न्यायप्रियता ऐसी थी कि सत्तापक्ष (जैसे मोरारजी देसाई, बी. जी. खेर) से लेकर विपक्ष तक का हर नेता उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता था।

स्थानीय प्रशासन का कुशल नेतृत्व : वे कई वर्षों तक अहमदनगर सिटी म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष रहे, अहमदनगर सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक के चेयरमैन (1930) रहे, तथा प्रसिद्ध 'आयुर्वेद रसशाला लि.' व 'आयुर्वेद महाविद्यालय' के प्रमुख के रूप में समाज कल्याण के कार्यों का संचालन किया।

जीवन दर्शन-'एजुकेशन, एंटरप्राइज और एथिक्स' : कुंदनमलजी का जीवन दर्शन तीन मुख्य स्तंभों पर टिका था- शिक्षा, उद्यमशीलता और नैतिकता। वे मानते थे कि बिना नैतिक मूल्यों के समाज आगे नहीं बढ़ सकता। इसी सोच के साथ उन्होंने सन् 1911 में 'अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी' (AES) की स्थापना की, ताकि समाज के अंतिम छोर पर बैठे गरीब और ग्रामीण बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।

जैन कॉन्फ्रेंस में युगप्रवर्तक योगदान और 'मद्रास अधिवेशन' : जैन समाज में कुंदनमलजी को एक 'मूक सेवक' कहा गया है, जो बिना किसी प्रचार के समाज को संगठित करने में विश्वास रखते थे। स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के 11वें मद्रास अधिवेशन के प्रमुख के रूप में कुंदनमलजी फिरोदिया को सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया था। मद्रास का यह अधिवेशन जैन समाज के इतिहास का 'अद्भुत अधिवेशन' माना जाता है, क्योंकि उस समय समाज के सामने कई आंतरिक कुप्रथाएं और जटिल प्रश्न खड़े थे। कुंदनमलजी ने अपनी कुशाग्र बुद्धि से उन सभी विवादों का सर्वमान्य निराकरण किया।

63 हजार रुपयों का ऐतिहासिक दान : समाज कल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता इतनी गहरी थी कि उन्होंने अपनी 63वीं वर्षगांठ के अवसर पर 63 हजार रुपयों का विशाल व्यक्तिगत दान देकर एक जनहितैषी ट्रस्ट की स्थापना की।

'संघ-ऐक्य योजना' की पूर्णता : स्थानकवासी जैन समाज के विभिन्न संप्रदायों और विचारधाराओं को एक मंच पर लाने के लिए जैन कॉन्फ्रेंस ने 'संघ-ऐक्य योजना' की शुरुआत की थी। कुंदनमलजी ने इस योजना को न केवल गति दी, बल्कि इसे पूर्ण सफलता तक पहुंचाया।

संतों की अनन्य सेवा और आध्यात्मिक सानिध्य : कुंदनमलजी का आध्यात्मिक झुकाव ऋषि संप्रदाय के महान संतों के प्रति अटूट था। उन्हें पूज्य श्री रतनऋषि जी महाराज और स्थानकवासी समाज के महासूर्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री आनंदऋषि जी महाराज का अनन्य सान्निध्य प्राप्त हुआ। आचार्य श्री आनंदऋषि जी महाराज की मुख्य कर्मभूमि अहमदनगर (आनंदधाम) ही थी। जब भी कुंदनमलजी सरकारी या राजनीतिक व्यस्तताओं से थकते, वे शांति और आत्मिक बल की खोज में संतों के चरणों में बैठ जाते थे। आचार्य सम्राट द्वारा दिए गए सामाजिक सुधारों (जैसे शिक्षा प्रसार, व्यसन मुक्ति और कुप्रथा उन्मूलन) के संदेशों को कुंदनमलजी ने जैन कॉन्फ्रेंस के माध्यम से पूरे देश में जमीनी स्तर पर क्रियान्वित किया। संतों की छत्रछाया के कारण ही वे राजनीति के कीचड़ में भी 'कमल' की तरह निष्कलंक बने रहे।

महाप्रयाण एवं अमर विरासत : वर्ष 1968 में राष्ट्र और जैन समाज को अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ सौंपकर इस महान आत्मा का महाप्रयाण हो गया। कुंदनमलजी ने संस्कारों की जो समृद्ध विरासत छोड़ी, वह उनकी पीढ़ियों में बखूबी प्रतिध्वनित हुई। उनके सुपुत्र श्री नवलमलजी फिरोदिया एक सच्चे गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी बने, जिन्होंने देश के औद्योगिक विकास में अभूतपूर्व भूमिका निभाते हुए फोर्स मोटर्स और बजाज टेम्पो की स्थापना की। भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से अलंकृत किया। उनके एक पुत्र श्री मोतीलालजी फिरोदिया भी लोकसभा सांसद के रूप में देश की सेवा में रहे।

आज उनके प्रपौत्र डॉ. अभय फिरोदिया (चेयरमैन, फोर्स मोटर्स) इसी गौरवशाली विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने पुणे (मावल) के पास 50 एकड़ में फैले विश्व के सबसे आधुनिक और अनूठे 'अभय प्रभावना जैन म्यूजियम एवं नॉलेज सेंटर' (Abhay Prabhavana) की स्थापना कर पूरी दुनिया में श्रमण संस्कृति, अहिंसा और अनेकांतवाद के जैन सिद्धांतों का परचम लहराया है।

श्री कुंदनमलजी फिरोदिया का जीवन यह सिद्ध करता है कि एक सच्चा जैन श्रावक राजनीति के शीर्ष पर बैठकर भी अपने धर्म, देश और नैतिक मूल्यों के प्रति पूरी तरह समर्पित रह सकता है। उनका जीवन इतिहास के पन्नों पर हमेशा जगमगाता रहेगा।

जैन गौरव

गीता बहन रांभिया जैन

जबलपुर में जन्मी, अहमदाबाद कर्म क्षेत्र बना, अ.भा. हिंसा निवारण संघ के साथ जीव दया का सघन कार्य प्रारंभ किया। अहमदाबाद महापौर द्वारा झाँसी की रानी उपाधि धारण की, गुजरात राज्य सरकार द्वारा मानद् पुलिस निरीक्षक का दायित्व व वेषभूषा प्रदान की गई, 1 लाख 65 हजार गौ वंश बचाया गया 27 अगस्त 1993 को कसाईयों द्वारा इनकी हत्या कर दी गई। सारा गुजरात राज्य सड़कों पर आ गया, हत्यारे पकड़े गये, धर्म प्राण जनता के दबाव में गुजरात सरकार को 25 सितम्बर 1993 को गौरक्षा का कानून बनाना पड़ा। धन्य है वीरांगना, शत् शत् वंदन।

कविता का कोना

पर्युषण मुक्तक

1
जलाते आत्मदीप मानो आई दीवाली।
विषय विकारों की जलाते होली।
प्राणिरक्षा के बंधन में बंधकर,
महापर्व पर्युषण मनाते भाग्यशाली।।

2
ज्ञान-ध्यान के फूलों की माला।
त्याग-तप का पावन उजाला।
क्षमा-मैत्री का सन्देशवाहक,
पर्व पर्युषण सबमें निराला।।

3
सह लेते समभाव से अनुकूल-प्रतिकूल।
कर लेते अहोभाव से कष्टों को कबूल।
मर्यादा, मौन और मार्दव के आंगन में,
उग सकते नहीं कभी कलह के बबूल।।

4
लघु हो या वृहत्, भूल भूल है।
प्रमाद हमारी भूलों का मूल है।
किसने न की होगी भूल मगर,
कबूल नहीं करना महाभूल है।।

- डॉ. दिलीप धींग जैन

✲ जो निज के दुःख की तरह पर के दुःख की अनुभूति करता है, निज के सुख से पर के सुख की तुलना करता है, जो समझता है, जानता है कि जैसे मुझे सुख-दुःख होता है, वैसे ही अन्य को भी होता है, वही धर्म को जानता है। सुख देने वाला सुखी होता है, दुःख देने वाला दुःखी।

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906